

سُورَةُ لُقْمَانَ

Surah 31 — Luqman (Luqman) · Meccan · 34 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

ये सूरा हिकमत से भरी हुई किताब की आयतें हैं

3

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ

जो (अज़सरतापा) उन लोगों के लिए हिदायत व रहमत हैं

4

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात देते हैं और वही लोग आखिरत का भी यकीन रखते हैं

5

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

यही लोग अपने परवरदिगार की हिदायत पर आमिल हैं और यही लोग (क़यामत में) अपनी दिली मुरादे पाएँगे

6

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا

هُزُوءًا ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۚ

और लोगों में बाज़ (नज़र बिन हारिस) ऐसा है जो बेहूदा क़िस्से (कहानियाँ) खरीदता है ताकि बग़ैर समझे बूझे (लोगों को)

खुदा की (सीधी) राह से भड़का दे और आयातें खुदा से मसख़रापन करे ऐसे ही लोगों के लिए बड़ा रुसवा करने वाला अज़ाब है

7

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا ۚ كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ ا ۚ
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो शेखी के मारे मुँह फेरकर (इस तरह) चल देता है गोया उसने इन आयतों को सुना ही नहीं जैसे उसके दोनो कानों में ठेठी है तो (ऐ रसूल) तुम उसको दर्दनाक अज़ाब की (अभी से) खुशख़बरी दे दे

8

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए नेअमत के (हरे भरे बेहशती) बाग़ हैं कि यो उनमें हमेशा रहेंगे

9

خُلِدِينَ فِيهَا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ ا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

ये खुदा का पक्का वायदा है और वह तो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है

10

خَلَقَ السَّمُوتَ بِغَيْرِ عَمَدٍ ۚ تَرَوْنَهَا ۚ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوْسِي أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَيَتَّ
فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ ا ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ ۚ كَرِيمٍ

तुम उन्हें देख रहे हो कि उसी ने बग़ैर सुतून के आसमानों को बना डाला और उसी ने ज़मीन पर (भारी भारी) पहाड़ों के लंगर डाल दिए कि (मुबादा) तुम्हें लेकर किसी तरफ़ जुम्बिश करे और उसी ने हर तरह चल फिर करने वाले (जानवर) ज़मीन में फैलाए और हमने आसमान से पानी बरसाया और (उसके ज़रिए से) ज़मीन में हर रंग के नफ़ीस जोड़े पैदा किए

11

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ ا ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ

(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) ये तो खुदा की ख़िलक़त है कि (भला) तुम लोग मुझे दिखाओं तो कि जो (जो माबूद) खुदा के सिवा तुमने बना रखे है उन्होंने क्या पैदा किया बल्कि सरकश लोग (कुफ़्फ़ार) सरीही गुमराही में (पड़े) हैं

12

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا لُقْمَنَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

और यक्रीनन हम ने लुक़मान को हिकमत अता की (और हुक्म दिया था कि) तुम खुदा का शुक्र करो और जो खुदा का शुक्र करेगा-वह अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है और जिसने नाशुक्र की तो (अपना बिगाड़ा) क्योंकि खुदा तो (बहरहाल) बे परवाह (और) क़ाबिल हमदो सना है

13

وَإِذْ قَالَ لُقْمَنُ لِابْنِهِ ۚ وَهُوَ يَعِظُهُ ۚ يَبْنَىٰ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝

और (वह वक्त याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से उसकी नसीहत करते हुए कहा ऐ बेटा (खबरदार कभी किसी को) खुदा का शरीक न बनाना (क्योंकि) शिर्क यक्रीनी बड़ा सख्त गुनाह है

14

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَلَدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ ۚ وَهَنَا عَلَىٰ وَهْنٍ ۚ وَفِصْلُهُ ۚ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَلَدِكَ إِلَيَّ الْمَصِيرُ ۝

(जिस की बख़्शिश नहीं) और हमने इन्सान को जिसे उसकी माँ ने दुख पर दुख सह के पेट में रखा (इसके अलावा) दो बरस में (जाके) उसकी दूध बढ़ाई की (अपने और) उसके माँ बाप के बारे में ताक़ीद की कि मेरा भी शुक्रिया अदा करो और अपने वालदैन का (भी) और आखिर सबको मेरी तरफ लौट कर जाना है

15

وَإِنْ جُهِدَاكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفٌ ۚ وَأَتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और अगर तेरे माँ बाप तुझे इस बात पर मजबूर करें कि तू मेरा शरीक ऐसी चीज़ को करार दे जिसका तुझे इल्म भी नहीं तो तू (इसमें) उनकी इताअत न करो (मगर तकलीफ़ न पहुँचाना) और दुनिया (के कामों) में उनका अच्छी तरह साथ दे और उन लोगों के तरीके पर चल जो (हर बात में) मेरी (ही) तरफ रुजू करे फिर (तो आखिर) तुम सबकी रुजू मेरी ही तरफ है तब (दुनिया में) जो कुछ तुम करते थे

يُبْنَىٰ إِنَّهَا إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ ۖ مِّنْ خَرْدَلٍ ۖ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۖ

(उस वक्त उसका अन्जाम) बता दूँगा ऐ बेटा इसमें शक नहीं कि वह अमल (अच्छा हो या बुरा) अगर राई के बराबर भी हो और फिर वह किसी सख्त पत्थर के अन्दर या आसमान में या ज़मीन में (छुपा हुआ) हो तो भी खुदा उसे (क़यामत के दिन) हाज़िर कर देगा बेशक खुदा बड़ा बारीकबीन वाक़िफ़कार है

يُبْنَىٰ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

ऐ बेटा नमाज़ पाबन्दी से पढ़ा कर और (लोगों से) अच्छा काम करने को कहो और बुरे काम से रोको और जो मुसीबत तुम पर पड़े उस पर सब्र करो (क्योंकि) बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ ۖ فَخُورٍ ۖ

और लोगों के सामने (गुरुर से) अपना मुँह न फुलाना और ज़मीन पर अकड़कर न चलना क्योंकि खुदा किसी अकड़ने वाले और इतराने वाले को दोस्त नहीं रखता और अपनी चाल ढाल में मियाँ रबी एख्तेयार करो

وَأَقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَأَغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۖ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ

और दूसरो से बोलने में अपनी आवाज़ धीमी रखो क्योंकि आवाज़ों में तो सब से बुरी आवाज़ (चीखने की वजह से) गधों की है

أَلَمْ تَرَوْا؟ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ؟ ظَهْرَةً؟ وَبَاطِنَةً؟ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجْدِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ؟ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ؟

क्या तुम लोगों ने इस पर गौर नहीं किया कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही ने यकीनी तुम्हारा ताबेए कर दिया है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें पूरी कर दीं और बाज़ लोग (नुसर बिन हारिस वगैरह) ऐसे भी हैं जो (स्वाह मा स्वाह) खुदा के बारे में झगड़ते हैं (हालाँकि उनके पास) न इल्म है और न हिदायत है और न कोई रौशन किताब है

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا؟ بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا؟ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ

और जब उनसे कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल की है उसकी पैरवी करो तो (छूटते ही) कहते हैं कि नहीं हम तो उसी (तरीके से चलेंगे) जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया भला अगरचे शैतान उनके बाप दादाओं को जहन्नुम के अज़ाब की तरफ बुलाता रहा हो (तो भी उन्ही की पैरवी करेंगे)

وَمَن يُسَلِّمْ وَجْهَهُ؟ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ؟ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ؟ وَإِلَى اللَّهِ عِقْبَةُ الْأُمُورِ

और जो शख्स खुदा के आगे अपना सर (तस्लीम) खम करे और वह नेकोकार (भी) हो तो बेशक उसने (ईमान की) मज़बूत रस्सी पकड़ ली और (आखिर तो) सब कामों का अन्जाम खुदा ही की तरफ है

وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ؟؟ إِيَّاكَ مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا؟؟ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

और (ऐ रसूल) जो काफिर बन बैठे तो तुम उसके कुफ्र से कुढ़ों नहीं उन सबको तो हमारी तरफ लौट कर आना है तो जो कुछ उन लोगों ने किया है (उसका नतीजा) हम बता देंगे बेशक खुदा दिलों के राज से (भी) खूब वाक़िफ है

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ۚ ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۚ

हम उन्हें चन्द रोज़ों तक चैन करने देंगे फिर उन्हें मजबूर करके सख्त अज़ाब की तरफ़ खींच लाएँगे

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) तुम अगर उनसे पूछो कि सारे आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया तो ज़रूर कह देंगे कि अल्लाह ने (ऐ रसूल) इस पर तुम कह दो अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें से अक्सर (इतना भी) नहीं जानते हैं

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

जो कुछ सारे आसमान और ज़मीन में है (सब) खुदा ही का है बेशक खुदा तो (हर चीज़ से) बेपरवा (और बहरहाल) काबिले हम्दो सना है

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَمٌ ۚ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ ۚ مِنْ بَعْدِهِ ۚ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ ۚ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और जितने दरख्त ज़मीन में हैं सब के सब क़लम बन जाएँ और समन्दर उसकी सियाही बनें और उसके (ख़त्म होने के) बाद और सात समन्दर (सियाही हो जाएँ और खुदा का इल्म और उसकी बातें लिखी जाएँ) तो भी खुदा की बातें ख़त्म न होंगी बेशक खुदा सब पर ग़ालिब (और) दाना (बीना) है

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ ۚ وَحِدَةٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۚ بَصِيرٌ

तुम सबका पैदा करना और फिर (मरने के बाद) जिला उठाना एक शख्स के (पैदा करने और जिला उठाने के) बराबर है बेशक खुदा (तुम सब की) सुनता और सब कुछ देख रहा है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

क्या तूने ये भी ख्याल न किया कि खुदा ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाखिल कर देता है (तो रात बढ़ जाती है) और दिन को (बढ़ा के) रात में दाखिल कर देता है (तो दिन बढ़ जाता है) उसी ने आफताब व माहताब को (गोया) तुम्हारा ताबे बना दिया है कि एक मुकर्रर मीयाद तक (यूँ ही) चलता रहेगा और (क्या तूने ये भी ख्याल न किया कि) जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे खूब वाकिफकार है

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَطْلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ

ये (सब बातें) इस सबब से हैं कि खुदा ही यक़ीनी बरहक़ (माबूद) है और उस के सिवा जिसको लोग पुकारते हैं यक़ीनी बिल्कुल बातिल और इसमें शक नहीं कि खुदा ही आलीशान और बड़ा रुतबे वाला है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ ءَايَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۚ

क्या तूने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि खुदा ही के फ़ज़ल से कश्ती दरिया में बहती चलती रहती है ताकि (लकड़ी में ये कूवत देकर) तुम लोगों को अपनी (कुदरत की) बाज़ निशानियाँ दिखा दे बेशक उस में भी तमाम सब्र व शुक्र करने वाले (बन्दों) के लिए (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानियाँ दिखा दे बेशक इसमें भी तमाम सब्र व शुक्र करने वाले (बन्दों) के लिए (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا ۚ اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۚ

और जब उन्हें मौज (ऊँची होकर) साएबानों की तरह (ऊपर से) ढाँक लेती है तो निरा खुरा उसी का अक़ीदा रखकर खुदा को पुकारने लगते हैं फिर जब खुदा उनको नज़ात देकर खुशकी तक पहुँचा देता है तो उनमें से बाज़ तो कुछ देर एतदाल पर रहते हैं (और बाज़ पक्के काफिर) और हमारी (कुदरत की) निशानियों से इन्कार तो बस बदएहद और नाशुके ही लोग करते हैं

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا ۚ رَبَّكُمُ وَأَخْشَوْا ۚ يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ ۚ وَلَا مَوْلُودٌ
هُوَ جَارٌ عَنْ وَالِدِهِ ۚ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا
يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ

लोगों अपने परवरदिगार से डरो और उस दिन का खौफ रखो जब न कोई बाप अपने बेटे के काम आएगा और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आ सकेगा खुदा का (क़यामत का) वायदा बिल्कुल पक्का है तो (कहीं) तुम लोगों को दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी धोखे में न डाले और न कहीं तुम्हें फरेब देने वाला (शैतान) कुछ फरेब दे

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ ۚ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۚ وَمَا تَدْرِي
نَفْسٌ ۚ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۚ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ ۚ بِأَيِّ أَرْضٍ ۚ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ

बेशक खुदा ही के पास क़यामत (के आने) का इल्म है और वही (जब मौक़ा मुनासिब देखता है) पानी बरसाता है और जो कुछ औरतों के पेट में (नर मादा) है जानता है और कोई शख्स (इतना भी तो) नहीं जानता कि वह खुद कल क्या करेगा और कोई शख्स ये (भी) नहीं जानता है कि वह किस सर ज़मीन पर मरे (गड़े) गा बेशक खुदा (सब बातों से) आगाह खबरदार है